खेती में भविष्य तलाश रहे इलेक्ट्रिकल इंजीनियर

गांवों की बदहाली सुधारने की मुहिम में लगे हैं संजीव, स्पॉन लैब नहीं रहने से उत्पादकों को नहीं मिल रहा लाभ

चन्द्रभूषण पाण्डेय बिंद

भौतिक सुख-सुविधा की मची होड़ में लोग शहरों में बसने का बहाना ढूंढ़ते रहते हैं। वहीं नालंदा के सुदूरवर्ती व विकास से काफी महरूम बिंद प्रखंड के मोहद्दीपुर के नवयुवक संजीव कुमार इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग करने के बाद भी गांव में रह कृषि के क्षेत्र में भविष्य तलाश रहे हैं।

गांवों के लोगों को आर्थिक विपन्नता से उबारने व बुनियादी सुविधाओं को गांवों में बहाल कराने का सपना संजोये संजीव आज कृषि वैज्ञानिकों के लिए भी प्रेरणास्त्रोत बन गये हैं। पपीता की खेती के लिए मशहूर गुजरात के सूरत प्रमंडल का 'नवसारी' जिले के किसानों की प्रेरणा से ओतप्रोत अभियंता संजीव काफी मुसीबतों को झेलते हुए भी गांव के विकास को तत्पर हैं।

बीआईटी, सिंदरी से इंजीनियरिंग की डिग्री लेने के बाद जब वे पहली बार गांव आये तो यहां के लोगों के साधुवाद से इतना प्रभावित हुए की यहीं के होके रह गये। राष्ट्रीय खुंभ (मशरूम) अनुसंधान केंद्र, सोलन से मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग लेने के बाद उन्होंने इंजीनियर आशुतोष के सहयोग से वृहत पैमाने पर मशरूम उत्पादन की खेती शुरू की।

नई पहल : पपीता के खेत में इंजीनियर किसान संजीव

सूबे में स्पॉन लैब(मशरूम बीज उत्पादन की प्रयोगशाला) नहीं रहने का मलाल है। मशरूम की खेती को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने 600 किसानों को भी जोड़ा। वे बताते हैं कि प्रति किलोग्राम मशरूम उत्पादन का खर्च 12 रुपए आता है जबकि कम से कम 60 रुपए किलोग्राम बाजार भाव है। संजीव का मानना है कि वैज्ञानिकों की 100 कृषि रिसर्च में से महज दो ही गांवों तक पहुंचती हैं। अतः गांवों में ही रिसर्च किया जाना चाहिए ताकि किसान अधिक प्रभावित हों। उन्होंने नालंदा को 'नवसारी' बनाने की ठान ली है।

वे खुद का स्पॉन लैबोरेट्री स्थापित करना चाह रहे हैं परंतु सरकारी हाकिमों की फाइलों में उनका प्रोजेक्ट गुम हो गया है। इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर खेती करने वाले संजीव को उनकी पत्नी अन्नपूर्णा महेश्वरी, रिटायर्ड पिता बालेश्वर प्रसाद, डॉक्टर भाई अरुण कुमार व मेरिन इंजीनियर राजीव रंजन भी कदम से कदम मिला रहे हैं। संजीव बताते हैं कि नवसारी के किसान पपीता की खेती से प्रति एक-ड़ 3-4 लाख की कमाई कर रहे हैं।